BANC 108: संस्कृति और समाज के सिद्धांत

अनुशिक्षक चिंहित सत्रीय–कार्य

(TMA)

कोर्स कोड: बीएएनसी 108

असाइनमेंट कोड: बीएएनसी 108/ASST/TMA/ जुलाई 2026 और जनवरी 2027

कुल अंक: 100

सत्रीय कार्य में तीन अनुभाग हैं। आपको सभी अनुभागों में सभी प्रश्नों के उत्तर देने होंगे।

सत्रीय कार्य – I

निम्नलिखित में प्रत्येक के बारे में 500 शब्दों में उत्तर दें। **2×20= 40**

क. उद्विकासवादी विचारधारा की मूल मान्यताओं की विवेचना कीजिए तथा उसकी आलोचनाओं का परीक्षण कीजिए।

ख. अमेरिकी सांस्कृतिक परंपरा पर एक टिप्पणी लिखिए।

सत्रीय कार्य – II

निम्नलिखित में प्रत्येक के बारे में 250 शब्दों में उत्तर दें। (संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए) **2×10= 20**

क. प्रतीकात्मक एवं व्याख्यात्मक उपागम पर आधारित कुछ शास्त्रीय मानववैज्ञानिक कृतियों का परीक्षण कीजिए।

ख. संरचनावाद के विकास में लेवी–स्ट्रॉस के योगदान की व्याख्या कीजिए।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 75 शब्दों में दीजिए। **5X2=10**

क. मालिनोव्स्की

ख. मार्क्सवादी सिद्धांत

ग. सामाजिक एकीकरण

घ. संवादात्मक नृवंशविज्ञान

इ. नव–उद्विकासवाद

सत्रीय कार्य – III

क. सिद्धांत की परिभाषा दीजिए तथा नृवंशविज्ञान संबंधी अध्ययन में सिद्धांत की आवश्यकता का परीक्षण कीजिए। **10**

ख. कोविड–19 महामारी के सामाजिक प्रभावों तथा डिजिटल अधिगम के अध्ययन हेतु एक शोध–रूपरेखा तैयार कीजिए। उपयुक्त औचित्य प्रस्तुत करते हुए यह भी स्पष्ट कीजिए कि इस विषय के अध्ययन के लिए आप किस सिद्धांत का प्रयोग करेंगे। **20**

क. उद्विकासवादी विचारधारा की मूल मान्यताओं की विवेचना कीजिए तथा उसकी आलोचनाओं का परीक्षण कीजिए।

उत्तर

मानवविज्ञान में उद्विकासवादी विचारधारा उन्नीसवीं शताब्दी में विकसित एक प्रभावशाली दृष्टिकोण है। इसका मुख्य उद्देश्य यह समझना था कि मानव समाज, संस्कृति, परिवार, धर्म और राजनीतिक संस्थाएँ समय के साथ कैसे बदलती हैं। चार्ल्स डार्विन के जैविक विकास-विचार से प्रेरणा अवश्य मिली, लेकिन प्रारम्भिक सांस्कृतिक उद्विकासवाद को जैविक उद्विकास के समान मानना गलत होगा। एडवर्ड बी. टायलर, लुईस हेनरी मॉर्गन और जेम्स जॉर्ज फ्रेज़र इसके प्रमुख प्रतिनिधि थे। इन्होंने विभिन्न समाजों की सांस्कृतिक विशेषताओं की तुलना करके मानव इतिहास के सामान्य विकासक्रम को समझने का प्रयास किया।

उद्विकासवादी विचारधारा की प्रमुख मान्यताएँ

एकरेखीय विकास और प्रगति। प्रारम्भिक विचारकों का मानना था कि सभी समाज प्रायः एक ही विकास-मार्ग से गुजरते हैं, हालांकि उनकी गति अलग-अलग हो सकती है। समाज अपेक्षाकृत सरल अवस्थाओं से जटिल सामाजिक संस्थाओं की ओर बढ़ता है। उन्होंने तकनीक, उत्पादन, परिवार और ज्ञान में परिवर्तन को विकास की पहचान समझा। इस मान्यता में आधुनिक पश्चिमी समाजों को अक्सर विकास की अंतिम अवस्था मान लिया गया था।

मानव-मन की एकता। टायलर और मॉर्गन के अनुसार विश्व के मनुष्यों में बुनियादी मानसिक क्षमताएँ समान हैं। इसलिए समान परिस्थितियों में मिलती-जुलती समस्याओं के सांस्कृतिक